आर्यकुमार स्मृति



अभिषगाचार्य श्री ए० ईश्वरदत्तजी विद्यालङ्कार
भूतपूर्व अध्यापक श्रीश्रद्धानन्द ब्रह्मचर्याश्रम ५।
गुरुकुल (कांगड़ी)

समर्पण

जिनके पवित्र चरणोंमें चौदह वर्ष सिर नवाकर
ब्रह्मचर्य, स्वाध्याय, निर्भयता, त्याग और
नियमित जीवनका पाठ सीख सका हूँ;
और जिनके असीम अनुराग और अनु-
ग्रह से ही मैं अपना यह तुच्छ
जीवन कुछ सफल कर सका हूँ;
एवं जिनके साप्ताहिक उपदेशों १५/१३५
से मैं कुछ आचारवान् बन
सका हूँ—उन्हीं अपने
परम पूज्य श्रद्धेय

आचार्य स्वामी श्रद्धानन्दजी सन्यासी

के चरण कमलोंमें श्रद्धा भक्ति पूर्वक विनयसे
नत मस्तक होकर यह मनुस्मृति-शतक
अर्थात् "आर्यकुमार स्मृति" सादर
समर्पित करता हूँ।

आप का परम विनीत
प्रिय शिष्य
ईश्वरदत्त-भिषगाचार्य

आर्य कुमार संकीर्तन

परिवर्द्धित एवं संशोधित तृतीय संस्करण

आर्य-कुमार संकीर्तन जैसी उपयोगी पुस्तक इतने सस्ते मूल्यमें आजतक नहीं देखी गई। एक ही पुस्तकमें स्वतिवाचन, शांति प्रकरण, ईश्वर प्रार्थनाके मंत्र, अर्थ सहित अग्निहोत्र, संध्या, उपयोगी वेदमन्त्र और सुन्दर समायिक बहुतसे भजनोंका अभूतपूर्व संग्रह है। पुस्तककी सफाई छपाई और कागज बहुत बढ़िया हैं। मुख्य पृष्ठपर महर्षि दयानन्दजी महाराजका भव्य चित्र है।

सबसे बड़ी विशेषता यह है कि मूल्य एक प्रतिका केवल ५ पैसे ही रखा गया है। १०० खरीदने वालोंको ६।) रु० में मिलती है। अबतक इसकी ५ हज़ार प्रतियां हाथोंहाथ बिकचुकी हैं। शीघ्रता कीजिये वरना अगले संस्करण तक ठहरना पड़ेगा।

आर्य कुमार कार्यालय

कलकत्ता।

मनुस्मृति-शतक

अर्थात्

आर्यकुमार-स्मृति की विशेषता



(१) मनुस्मृति जिस श्लोक पर समाप्त होती है, उसी श्लोकसे "आर्य कुमार-स्मृति" प्रारम्भ होती है।

(२) मनुस्मृतिमें २७४४ श्लोक हैं; जिन्हें सब आर्यकुमार पढ़ भी नहीं सकते हैं—परन्तु "आर्यकुमार-स्मृति" के सौ श्लोक भलीभांति जिह्वाग्र कर सकते हैं। एवं प्रक्षिप्त श्लोंका भय भी नष्ट हो जाता है।

(३) प्रत्येक विषयके बिखरे हुवे श्लोक एकत्रित कर दिए गये हैं अतएव विषयका ज्ञान ठीक ठीक हो सकता है।

—*—

प्रकाशक—

श्रीविश्वम्भर प्रसाद शर्मा विशारद

(सम्पादक-आर्यकुमार)

प्रथम बार दो हजार | गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ीकी पचीसी फाल्गुण १९८३ सम्वत् | मूल्य दो आना

* ओ३म् *

श्रद्धानन्द पुस्तकमाला

का

प्रथम पुष्प

आर्य-कुमार स्मृति

वा

मनुस्मृति शतक

लेखक—

भिषगाचार्य पं० ईश्वरदत्तजी विद्यालंकार (गुरुकुल कांगड़ी)

प्रकाशक

पं० विश्वम्भर प्रसाद शर्म्मा विशारद

सम्पादक—आर्य-कुमार कलकत्ता

प्रकाशन मन्त्री-भारतवर्षीय आर्य-कुमार परिषद्

नं० ४ शोभाराम वैशाख स्ट्रीट कलकत्ता ।

दयानन्दाब्द १०२

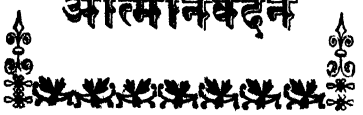
प्रथम वार } वसंत पंचमी, सं० १९८३ ।

२००० } मूल्य २ आना,

[—]

* ओ३म् *

आत्मनिवेदन





अपने परम पूज्य श्रद्धेय आचार्य श्रीस्वामी श्रद्धानन्दजी सन्यासीके मुखारविन्दसे गुरुकुल विश्वविद्यालय काँगड़ीमें जब मैं साप्ताहिक उपदेशों द्वारा मनुस्मृतिका स्वाध्याय किया करता था; उस समयकी मेरी प्रबल आकांक्षा आज पूर्ण हुई है। जिन पवित्र विचारोंका प्रतिबिम्ब मेरे कोमल बाल्य हृदयपर पड़ा था उन्हींका दिग्दर्शन "आर्यकुमार—स्मृति" में होगया है।

इसमें मेरा कुछ भी नहीं है—फिर भी मैं ने बिखरे हुये फूलोंके १६ स्तवक (गुच्छे) बनाकर अपनी कुलमाता की पचीसीके अवसर पर कुलपति अपने परम पूज्य आचार्यजीके चरणोंमें श्रद्धा और भक्तिपूर्वक समर्पित कर दिए हैं; इतना ही मुझे संतोष है।

फूलोंमें सुगन्ध है इसीलिये मेरे बनाये गुच्छोंमें भी सुगन्ध आ रही है परन्तु मैं इस श्रेयका पात्र नहीं हूं। मैं तो संसारभर की जागृति और उन्नति आर्यकुमारोंकी जागृति और उन्नतिमें मानता हूं इसीलिये आर्यकुमारोंकी हितसाधनाकी भावनासे मैंने यह प्रयत्न किया है।

मेरे आर्यकुमार भाइयों !

यह "आर्यकुमार-स्मृति" आपके लिए है; इसको अपनेसे कभी अलग मत कीजिए। प्रतिदिन प्रातःकाल स्वाध्याय कीजिए और चौंसठ कलाओं द्वारा अपने जीवनमें पूर्ण उन्नति कीजिये।

किमधिकं-विज्ञेषु।

आर्यकुमार गीताकी तरह श्लोकोंकी संख्या सौ रखते हुवे केवल भावार्थ मात्र अत्यन्त आवश्य जानकर कर दिया है। शब्दार्थके लिये स्वयं यत्न कीजिये।

प्रत्येक श्लोकके नीचे जो मनुस्मृतिके अध्याय और श्लोककी संख्या दीगई है वह बम्बईमें छपी हुई मनुस्मृतिके अनुसार है। अस्तु—:

अन्तमें अपने प्रिय सुहृत् श्री पण्डित धीरेन्द्रजी सिद्धान्तालंकार (गुरुकुल सूपा) और उत्साह मूर्त्ति मित्रवर श्रीपण्डित विश्वम्भर प्रसादजी शर्मा विशारद (सम्पादक-आर्यकुमार) कलकत्ता को हृदयसे भूरि भूरि धन्यवाद देता हूं जिनकी सहायतामे मेरा यह तुच्छ प्रयास पूर्ण हुआ है।

१ दिसम्बर
सन् १९२६

वैदिकधर्मका सेवक
ईश्वरदत्त भिषगाचार्य
(स्नातक—गुरुकुल, कांगड़ी)

प्रकाशकका वक्तव्य

आर्य-कुमार स्मृतिके लेखक मेरे परम मित्र भिषगाचार्य पण्डित ईश्वरदत्तजी विद्यालङ्कार गुरुकुल कांगड़ीने इस पुस्तकको मेरे पास प्रकाशनार्थ दिसम्बर मासके आरम्भमें ही भेज दिया था। सुयोग्य लेखकने यह पुस्तक अपने आचार्य-गुरुकुल कांगड़ीके संस्थापक स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराजको समर्पणाकी है। पुस्तक गुरुकुल कांगड़ी का रजत जयन्ती (पचीसी) के उपलक्षमें लिखा गई थी। और लेखक महाशयका यह शुभ संकल्प था कि यह उपहार अपने "कुल पिता"के कर कमलोंमें समर्पितकर अपनेको कृत्य कृत्य करते किन्तु यह मनोवांच्छा अपूर्ण ही रह गई और विगत २३ दिसम्बर १९२६ को सांयकालके पौने ४ बजे उस वीर सन्यासीने एक कातिल अब्दुलरशीद नामक दुष्ट मुसलमान की पिस्तौलकी गोलियां अपनी छातीमें खाकर प्यारे वैदिक धर्मके लिये अपने प्राणों की आहुति देदी।

धर्मपर बलिदान होनेवाले इस वीरात्माकी पवित्र स्मृतिमें भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषदको ओरसे एक पुस्तकमाला प्रकाशित करनेका हमने संकल्प किया है। स्वामी श्रद्धानन्दजीको आर्य-

कुमारोंपर बड़ा भरोसा था और वे सदैव उन्हें प्रोत्साहन देते रहते थे। अतएव उन्हीके पवित्र नामपर हम इसका नामकरण करते है। सुतराम् इस पुस्तकमालाका नाम "श्रद्धानन्द पुस्तकमाला" होगा। इसके द्वारा प्रकाशित पुस्तकें वैदिक साहित्यकी अभिवृद्धि और उसके प्रसारमें सहायक होंगी। "आर्यकुमार स्मृति" इस मालाका प्रथम "पुष्प" हैं। द्वितीय पुष्प भी सम्मवतः गुरुकुलकी जयन्ती तक तैयार होजावेगा।

आशा है प्यारे आर्यकुमार भ्रातृवृन्द "परिषद" के इस सदुद्योग में पूर्ण सहयोग प्रदानकरेंगे और आर्य संसारके विद्वान अपनी अमूल्य रचनाओं द्वारा इस "श्रद्धानन्द पुस्तकमाला" को मूल्यवान बनायगे।

विश्वम्भर प्रसाद शर्मा विशारद।

प्रकाशन विभाग

आर्यकुमार कार्यालय कलकत्ता



* ओ३म् *

आर्यकुमार-स्मृतिमें वर्णित चौंसठकलाओं की क्रमबद्ध-सूची

—:o:—

अथ प्रथमः स्तवकः

क्रमाङ्क	कला	श्लोक संख्या
(१)	मनुस्मृतिका बड़ा महत्व है।	१
(२)	परमपिता परमात्माको कभी मत भूलो।	२
(३)	हृदयमें भगवान्‌को जानकर पाप मतकरो।	३
(४)	जगदीश्वर सब पापोंको जानता है।	४
(५)	मनुस्मृति भी वेदानुकूल है।	५
(६)	वेदको न पढ़नेवाला शूद्र कहाता है।	६
(७)	संकल्प शक्तिके बिना कार्य सिद्ध नहीं होता।	७

अथ द्वितीयः स्तवकः

—*—

(८)	श्रुति और स्मृति ही धर्मके लिए प्रामाणिक हैं।	८
(९)	धर्मके दस लक्षणोंका पालन करनेवाला ही धर्मात्मा है।	९
(१०)	गायत्री तीनों वेदोंका सार है, इसलिये इसीकी जप सर्व श्रेष्ठ है।	१३

अथ तृतीयः स्तवकः

—*—

(११)	ब्रह्मचर्य नाश ही अवनतिका कारण है।	१५
(१२)	स्वाध्यायमें कभी त्रुटि मत करो।	१९

अथ चतुर्थः स्तवकः

(क्रमाङ्क)		(श्लोक संख्या)
(१३)	इन्द्रिय तपस्यासे होता है।	२१

अथ पञ्चमः स्तवकः

(१४)	सन्ध्या, अग्नि होत्र आदि पञ्च महायज्ञ हैं।	२८

अथ षष्टः स्तवकः

(१५)	उन्नतिकी प्रबल अभिलाषा करो।	३५
(१६)	विघ्नोंसे भयभीत होकर कार्य मत रोको।	३६
(१७)	प्रिय सत्य भाषण ही धर्मानुकूल है।	३७
(१८)	सदाचारी सौ वर्ष तक जीता है।	३८
(१९)	पाप करके सत्य कहनेसे पाप छूट जाता है।	३९

अथ सप्तमः स्तवकः

(२०)	अवनतिके मुख्य चार कारण हैं।	४१
(२१)	सोनेसे पूर्व एकान्तमें बैठकर अपना हित चिन्तन करो।	४२
(२२)	ब्राह्म मुहूर्तमें उठकर नित्यकर्म करो।	४३
(२३)	अपनेसे बड़ोंको सादर नमस्कार नमस्तेकरो	४४
(२४)	गुरुकी सेवा करके विद्या प्राप्त करो।	४६

अथ अष्टमः स्तवकः

(२५) अधिक भोजन कभी मत करो। ४७
(२६) मास भक्षण महा पाप है। ५०

अथ नवमः स्तवकः

(क्रमांक) (श्लोक संख्या)
(२७) आचार्यका लक्षण। ५३
(२८) उपाध्यायका लक्षण। ५४
(२९) गुरुका लक्षण। ५५
(३०) माता-पिताका लक्षण। ५६
(३१) वेदानुकूल आचरण करनेवाला ही बड़ा है। ५७
(३२) नवयुवक भी वृद्धोंकी तरह पूज्य हो सकते हैं। ५८

अथ दशमः स्तवकः

(३३) षोडश संस्कार अनिवार्य हैं। ५९
(३४) ब्रह्मचारी बनकर शूद्र भी विद्याका अधिकारी है। ६०
(३५) गुरुभक्तिसे विद्या सफल होती है। ६२
(३६) शूद्र कुलोत्पन्न विद्वान्से भी विद्या ग्रहण करो। ६४

अथ एकादश स्तवकः

(३७) तीन प्राणायाम प्रति दिन नियम पूर्वक किया करो। ६५
(३८) शुष्क विवाद और वैर किसीके साथ मत करो। ६६
(३९) संतोषी मनुष्य सब धनवानोंसे बड़ा है। ६७
(४०) रुपयेके लेन देनमें सदा ईमानदार बनो। ६८
(४१) हंसीमें भी जुआ मत खेलो। ६९
(४२) शराब पीना महा पाप है। ७०

अथ द्वादशः स्तवकः

(४३) वर्ण व्यवस्था गुणकर्म स्वभावानुसार मानो। ७१
(४४) सहपाठियोंको जन्म की जातिसे बुरा मत कहो। ७५
(४५) माता-पिताको नरकसे बचाना पुत्रका कर्तव्य है। ७६

अथ त्रयोदशः स्तवकः

(क्रमाङ्क) (श्लोक संख्या)
(४६) वर्ण केवल चार हैं। ७७
(४७) सच्चे ब्राह्मणका लक्षण ! ७८
(४८) शूद्रका लक्षण ! ७९
(४९) पूजनीयोंकी पूजा अवश्य करो। ८०
(५०) निरक्षर ब्राह्मणको दान देना व्यर्थ है। ८१
(५१) गुण हीनको कन्या देना पाप है। ८२

अथ चतुर्दशः स्तवकः

(५२) स्त्रियोंका यथोचित सम्मान करो। ८३
(५३) स्त्रियोंके लिये पतिसे बड़ा देवता नहीं है। ८४
(५४) संतान की इच्छासे विधवा विवाह भी शास्त्रीय है। ८६
(५५) अक्षत योनि विधवाका पुनः संस्कार मात्र होता है ८७
(५६) वर्णान्तर विवाहसे वर्ण संकर नहीं होता है। ८८

अथ पञ्चदश स्तवकः

(५७) अपना बलिदान करनेसे स्वराज्य प्राप्त होता है। ८९
(५८) परतन्त्रतासे बढ़कर दुःख नहीं है। ९०
(५९) अनार्यों के तो पड़ोसमें भी न रहो। ९१
(६०) पाखण्डियों और धूर्तों का तो वाणीसे भी सन्मान न करो ९२
(६१) जो प्राणलेने आता हो; चाहे पूजनीय भी हो उसको मार डालो। ९३
(६२) दण्डके बिना पापसे छुटकारा नहीं होता है। ९४

अथ षोडश स्तवकः

[६३] शुद्धिका कार्य अत्यन्त आवश्यक है! ९५
(६४) गो रक्षासे बढ़कर अन्य पुण्य नहीं है। ९८

* ओ३म् *

मनुस्मृति शतक

अर्थात्

आर्यकुमार-स्मृति

षोडशी स्तवकोंमें विभाजित चौंसठ कलाओं द्वारा
षोडशी परमात्माका ही ज्ञान प्राप्त कीजिए ।

(पहिली कला)

मनुस्मृतिका बड़ा महत्व है ।

(१) इत्येतन्मानवं शास्त्रं, भृगुप्रोक्तं पठन् द्विजः।
भवत्याचार वान्नित्यं, यथेष्टां प्राप्नुयाद्गतिम् ॥

(म० अ० १२ श्लो० १२६)

मनु महाराजकी बनाई हुई मनुस्मृतिके इन सौ श्लोकोंको अच्छी प्रकार पढ़नेवला मनुष्य सदाचारी और उच्च पदका अधिकारी हो जाता है। इसलिए आर्यकुमार-स्मृतिका स्वाध्याय प्रतिदिन करना चाहिए।

(दूसरी कला)

परमपिता परमात्माको कभी मत भूलो।

(२) प्रशासितारं सर्वेषा, मणीयांसमणोरपि।
रुक्माभं स्वप्नधीगम्यं, विद्यात्तं पुरुषं परम् ॥

(म० अ० १२ श्लो० १२२)

सर्व नियन्ता, सूक्ष्माति सूक्ष्म, सुवर्ण सम शोभित अन्तः शक्तियोंके द्वारा जानने योग्य परम पुरुष परमात्माको जानो।

(तीसरी कला)

हृदयमें भगवान्को जानकर पाप मत करो।

(३) एकोऽहमस्मीत्यात्मानं, यत्त्वं कल्याण मन्यसे।
नित्यंस्थितस्ते हृद्येष, पुण्यपापेक्षिता मुनिः ॥

(म० अ० ८ श्लो० ९१)

जो मनुष्य अपनेको अकेला जानकर पाप करता है उसके हृदयमें परमात्मा विराजमान है और सब पुण्य पापको देख रहा हैं

(चौथी कला)

जगदीश्वर सब पापोंको जानता है।

(४) मन्यन्ते वै पाप कृतो, न कश्चित् पश्यतीतिनः।
ताँस्तुदेवाः प्रपश्यन्ति, स्वस्यैवान्तर पूरुषः ॥

(म० अ० ८ श्लो० ८५)

पाप करनेवाले समझते हैं कि हमें कोई नहीं देखता है-परन्तु अन्तःकरणमें स्थित परमात्मा सब कुछ देखा करता है॥

(पांचवीं कला)

मनुस्मृति भी वेदानुकूल है।

(५) यः कश्चित् कस्यचिद्धर्मो, मनुनापरिकीर्त्तितः।
स सर्वोऽभिहितोवेदे, सर्वज्ञानमयो हि सः॥

(म० अ० २ श्लो० ७)

मनुने जो जिसका धर्म बताया है वह सब वेदमें कहा है। वास्तवमें वेद ही ज्ञानका भण्डार है। वेद विरुद्ध मनुस्मृति भी त्याज्य है।

(छठी कला)

वेदको न पढ़नेवाला शूद्र कहाता है।

(६) योऽनधीत्य द्विजो वेद मन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्व, माशुगच्छति सान्वयः॥

(म० अ० २ श्लो० १६८)

जो वेदको नहीं पढ़ता है वह इसी जन्ममें शूद्र बन जाता है।

(सातवीं कला)

संकल्पशक्तिके बिना कार्य सिद्ध नहीं होता।

(७) संकल्पमूलः कामोवै, यज्ञाः संकल्प सभवाः।
व्रता नियम धर्माश्च, सर्वे संकल्पजाःस्मृताः॥

(म० अ० २ श्लो० ३)

व्रत, यज्ञ, यम और नियम सभी दृढ़ संकल्प करनेके बाद ही पूर्ण होते हैं॥

अथ द्वितीय स्तवकः

(आठवीं कला)

श्रुति और स्मृति हो धर्मके लिये प्रामाणिक हैं।

(८) श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो, धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः
ते सर्वार्थेष्वमीमांस्ये, ताभ्यां धर्मो हि निर्बभौ ॥

(म० अ० २ श्लो० १०)

वेदके लिये श्रुति और धर्मशास्त्रके लिए स्मृति शब्दका व्यवहार है। धर्मके निर्णयके लिए दोनों प्रामाणिक हैं परन्तु वेद बिरुद्ध स्मृति त्याज्य है।

(नवमी कला)

धर्मके दश लक्षणोंका पालन करनेवाला हीं धर्मात्मा है।

(९) धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं, शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो, दशकं धर्म लक्षणम् ॥

(म० अ० ६ श्लो० ९२)

धैर्य, क्षमा, शीतोष्णका सहन, अस्तेय, शुद्धता, इन्द्रियोंका वशीकरण, शास्त्रज्ञान, आत्म ज्ञान, सत्य और अक्रोध धर्मके मुख्य दस लक्षण हैं।

(१०) न सीदन्नपिधर्मेण, मनोऽधर्मे निवेशयेत ।
अधार्मिकाणां पापाना, माशुपश्यन् विपर्ययम् ॥

(म० अ० ४ श्लो० १७१)

धर्मसे चाहे प्रथम कष्ट होता है तो भी अधर्माचरण कदापि न करो क्योंकि अधर्मसे बड़े बड़े दुष्परिणाम होते हैं ।

(११) नाधर्मश्चरितोलोके, सद्यःफलतिगौरिव ।
शनरावर्त्तमानस्तु, कर्तुर्मूलानि कृन्तति ॥

(म० अ० ४ श्लो० १७२)

अधर्मका परिणाम एकदम नहीं मालूम होता है परन्तु धीरे धीरे बढ़ता हुआ जड़ोंको काट देता है ।

(१२) एक एव सुहृद्धर्मो, निधनेप्यनुयातियः ।
शरीरेण समं नाशं, सर्वमन्यद्धिगच्छति ॥

(म० अ० ८ श्लो० १७)

सच्चा मित्र तो केवल एक धर्म ही है जो मरनेके बाद भी साथ जाता है शेष सब शरीरके साथ नष्ट हो जाते हैं । इसलिये पुत्र, कलत्रका मोह छोड़कर सारे भुवनके विधाता भगवान्को प्रति-क्षण स्मरण करते हुए धर्मका पालन करते रहो । हसीमें कल्याण है। कहा भी है "यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः"

(वैशेषिक-दर्शन) ।

(दशवीं कला)

गायत्री तीनों वेदोंका सार है इसलिये इसीका जप सबे श्रेष्ठ है।



(१३) त्रिभ्य एव तुवेदेभ्यः, पादं पाद मदूदुहत्।
तदित्यृचोऽस्याः सावित्र्याः, परमेष्ठी प्रजापतिः॥

(म० अ० २ श्लो० ७७)

तीनों वेदोंमेंसे एक एक पाद गायत्रीका बना है इसीलिये गायत्री परमश्रेष्ठ है।

(१४) सावित्रीं च जपेन्नित्यं, पवित्राणि च शक्तितः।
सर्वेष्वेव व्रतेष्वेवं, प्रायश्चित्तार्थमादृतः॥

(म० अ० ११ श्लो० २२५)

सावित्री अर्थात् गायत्री जिसको गुरुमंत्र भी कहते है--उसीका प्रतिदिन जप करना चाहिये। व्रत भंग होनेपर प्रायश्चित्तके लिये भी गायत्रीका जप परमोत्तम है।

नोटः--- प्रत्येक आर्यकुमारको प्रतिदिन सोनेसे पूर्व २५ बार गायत्रीका जप अवश्य करना चाहिये। साथ साथ कमसेकम २५ वर्ष ब्रह्मचारी रहनेकी भावना भी दृढ़ करनी चाहिये।

अथ तृतीयः स्तवकः



(ग्यारहवीं कला)

ब्रह्मचर्य नाश ही अवनतिका कारण है।

(१५) इन्द्रियाणां तु सर्वेषां, यद्येकं क्षरतीन्द्रियम्।
तेनास्य क्षरति प्रज्ञा, दृतेःपादादिबोदकम्॥

(म० अ० २ श्लो० ९९)

सब इन्द्रियोंमेंसे यदि एक मूत्रेन्द्रिय ही वशमें न रहे तो सारी बुद्धि नष्ट हो जाती है।

(१६) एकः शयीत सर्वत्र, नरेतःस्कन्दयेत् क्वचित्।
कामाद्धि स्कन्दयन् रेतो, हिनस्ति व्रतमात्मनः॥

(म० अ० २ श्लो० १८०)

ब्रह्मचर्यकी रक्षाके लिये लिये अकेला ही सोना चाहिये। वीय-नाश होते ही व्रत टूट जाता है।

(१७) वेदोदितानां नित्यानां, कर्मणां समतिक्रमे।
स्नातकव्रत लोपे च, प्रायश्चित्तम भोजनम्॥

(म० अ० ११ श्लो० २०३)

वेदोक्त नित्यकर्मों में विघ्न पड़ जानेपर प्रायश्चित्तके लिये भोजन न करना चाहिये।

(१८) वेदानधीत्य वेदौवा, वेदंवापि यथाक्रमम् ॥
अविप्लुत ब्रह्मचर्यो, गृहस्थाश्रममाविशेत् ॥

(अ० अ० ३ श्लोक २)

कमसे कम एक वेद समाप्त करनेके बाद जो कि १५ वर्षमें हो सकता है गृहस्थी बनना चाहिये।

(बारहवीं कला)

स्वाध्यायमें कमी त्रुटि मत करो।

(१९) सर्वान्परित्यजेदर्थान्, स्वाध्यायस्य विरोधिनः
यथातथा ध्यापयंस्तु, साह्यस्यकृतकृत्यता ॥

(म० अ० ४ श्लोक १७)

स्वाध्याय की विरोधी सब बातें छोड़ दो। वास्तवमें स्वाध्याय करनेमें ही सफलता है।

(२०) आहै व स नखाग्रेभ्यः, परमं तप्यतेतपः।
यःस्रग्ण्यपि द्विजोऽधीते, स्वाध्यायंशक्तितोऽन्वहम् ॥

(म० अ० २ श्लोक १६७)

जो प्रतिदिन स्वाध्याय करता है वह फूलोंकी माला धारण करता हुआ भी नखसे शिख तक परम तप करता है। यद्यपि आर्यकुमारके लिये माला पहिनना अनुचित है तो भी स्वाध्यायका महत्व जितलानेके लिये ऐसा लिखा है।

अथ चतुर्थः स्तवकः

(तेरहवीं कला)

इन्द्रिय निग्रह तपस्यासे होता है।

(२१)श्रोत्रं त्वक्चक्षुषीजिह्वा,नासिकाचैवपञ्चमी।
पायूपस्थं हस्तपादं वाक् चैव दशमी स्मृता ॥

(म० अ० २ श्लो० ९०)

आँख, नांक, कॉन, जीभ और त्वचा यह पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं। मूत्रेन्द्रिय, गुदा, हाथ, पांव और वाणी यह पांच कर्मेन्द्रियां हैं।

(२२) एकादशं मनोज्ञेयं, स्वगुणेनोभयात्मकम्।
यस्मिञ्जित्ते जितावेतौ भवतःपञ्चकौ गणौ ॥

(म० अ० २श्लो० ९२)

ग्यारहवां मन है। जो ज्ञान और कर्म दोनोंका साधान है। केवल एक मात्र मनको वशमें करनेसे सब इन्द्रियां वशीभूत हो जाती हैं।

(२३) इन्द्रियाणां प्रसंगेन, दोषमृच्छत्यसंशयम्।
सन्नियम्य तु ताम्येव, ततःसिद्धिं नियच्छति ॥

(म० अ० २ श्लो० ९३)

इन्द्रियोंको वशमें न करनेसे निस्सन्देह बिगाड़ होता है। इसलिये इन्द्रियोंको वशमें करके सिद्धि प्राप्त करो॥

(२४) न जातु कामःकामाना, मुपभोगेन शाम्यति
हविषा कृष्णवर्त्मेव, भूय एवाभिवर्धते ॥

(म० अ० २ श्लो० ९४)

विषय वासनायें भोग करनेसे शान्त नहीं होती हैं। अपितु जसे आग घृतसे बढ़ती है वैसे ही बढ़ जाती है।

(२५) न तथैतानि शक्यन्तो, संनियन्तुमसेवया।
विषयेषु प्रजुष्टानि, यथा ज्ञानेन नित्यशः ॥

[म० अ० २ श्लो० ९६]

केवल भोग न करनेसे भी वासनायें शान्त नहीं होती हैं। अपितु ज्ञान संचय करनेसे दब जाती हैं। इसलिये प्रतिक्षण स्वाध्याय काही ध्यान रखो।

(२६) यद्दुस्तरं यद्दुरापं, यद्दुर्गं यच्च दुस्तरम्।
सर्वंतु तपसासाध्यं, तपोहि दुरतिक्रमम् ॥

(म० अ० ११ श्लो० २३८)

इन्द्रिय निग्रह अत्यन्त कठिन है परन्तु तपसे हो जाता है।

(२७) आचारः परमोधर्मः श्रुत्युक्तःस्मार्त्तएव च।
तस्मादस्मिन्सदा युक्तो,नित्यं स्यादात्मवान्द्विजः॥

(म० अ० १ श्लो० १०८)

आचार ही परम धर्म है और वह इन्द्रिय निग्रहसे होता है। इसलिये इन्द्रिय निग्रह करते हुवे सदाचारी बनो॥

(चौदहवीं कला)

सन्ध्या, अग्निहोत्र आदि पंच महा यज्ञ हैं।

(२८) ऋषियज्ञं देवयज्ञं च, भूतयज्ञं च सर्वथा।
नृयज्ञं पितयज्ञं च, यथाशक्ति न हापयेत् ॥

(म० अ० ४ श्लो० २१)

सन्ध्या, अग्निहोत्र, जीवित पितरोंका श्राद्ध, अतिथि पूजा और बलि वैश्वदेव यही पाँच महा यज्ञ हैं।

(२९)पूर्वां संध्यांजपंस्तिष्ठेत्,सावित्रीमर्कदर्शनात्।
पश्चिमां तु समासीनः, सम्यगृक्ष विभावनात् ॥

(म० अ० २ श्लो० १०१)

प्रातःकाल संध्या सूर्यदर्शनसे पूर्व कर लेनी चाहिये। सायंकाल सूर्यास्तके बाद प्रारम्भ करो।

(३०)नतुतिष्ठतियःपूर्वां,नोपास्तेयस्तुपश्चिमाम्।
स शूद्रवद् बहिष्कार्यः, सर्वस्माद्विज कर्मण ॥

(म० अ० २ श्लो० १०३)

जो प्रातः और सायं संध्या नहीं करता हैं—वह पापी है। ऐसे मनुष्यको शूद्रकी तरह समझो।

(३१) ऋषयो दीघ सन्ध्यत्वा, दीर्घमायुरवाप्नुयुः ।
प्रज्ञां यशश्च कीर्त्तिं च ब्रह्मवर्चसमेव च ॥

(म० अ० ४ श्लो० ९४)

दीर्घायु की इच्छा करनेवालेको प्राणायामके साथ देरतक संध्या करनी चाहिये ।

(३२) अग्निहोत्रञ्च जुहुया,दाद्यन्तो द्युनिशोःसदा ।
दर्शेन चार्धमासान्तो, पोर्णमासेन चैवहि ॥

(म० अ० ४ श्लो० २५)

प्रातः सूर्योदय होनेपर और सायं सूर्यास्तसे पूर्व हवन करो ।

(३३) न वै स्वयं तदश्नीया,दतिथिं यन्न योजयेत् ।
धन्यं यशस्यमायुष्यं, स्वर्ग्यं चातिथि पूजनम् ॥

(म० अ० ३ श्लो० १०६)

अतिथिको भोजन कराये, बिना स्वयं भोजन मतकरो । अतिथि पूजा अत्यन्त आवश्यक है ।

(३४) स्वाध्यायेन व्रतौर्होमै, स्त्रैविद्येनेज्यया सुतैः।
महायज्ञैश्च यज्ञैश्च, ब्राह्मीयं क्रियते तनुः ॥

(म० अ० २ श्लो० २८)

स्वाध्याय, पंच महायज्ञादिके अनुष्ठानसे शूद्र कुलोत्पन्न भी गुण कर्मानुसार ब्राह्मण हो जाता है । इसलिये पंच महायज्ञोंको मत भूलो ।



(पन्द्रहवीं कला)

उन्नतिकी प्रबल अभिलाषा करो।

(३५) नात्मानमवमन्येत, पूर्वाभिरसमृद्धिभिः।
आमृत्योः श्रियमन्विच्छे, न्नैनां मन्येत दुर्लभम् ॥

(म० अ० ४ श्लो० १३६)

पहली अवनतिको भुलादो और मृत्युपर्यन्त उन्नतिकी आकांक्षा करो—उसको कभी दुर्लभ मत जानो।

(सोलहवीं कला)

विघ्नोंसे भय भीत होकर कार्य मत रोको।

(३६) आरभेतैव कर्माणि, श्रान्तःश्रान्तः पुनः पुनः।
कर्माण्यारभमाणंहि, पुरुषं श्रर्निषेवते ॥

(म० अ० ६ श्लो० ३००)

बार बार थककर भी काम करते जाओ। अन्तमें श्री लाभ होगी।

(सत्तरहवीं कला)

(३७) सत्यंब्रूयात्प्रियंब्रूयात्, नब्रुयात्सत्यमप्रियम्।
प्रियञ्च नानृतं ब्रूयात्, एष धर्मःसनातनः ॥

(म० अ० ४ श्लो० १३८)

सच बोलो परन्तु अप्रिय सच मत बोलो।

(अठारहवीं कला)

सदाचारी सौ वर्ष तक जीता है।



(३८) सर्व लक्षणहीनोऽपि, यःसदाचार वान्नरः।
श्रद्धानोऽनसूयश्च, शतं वर्षाणि जीवति ॥

(म० अ० ४ श्लोक० १५८)

सर्व लक्षणोंसे रहित सदाचारी मनुष्य सर्व श्रेष्ठ है।

(उन्नीसवीं कला)

पाप करके सत्य कहनेसे पाप छूट जाता है।



(३९) यथा यथा नरोऽधर्मं, स्वयं कृत्वानुभाषते।
तथा तथा त्वचेवाहि, स्तेनाधर्मेण मुच्यते ॥

(म० अ० ११ श्लो० २०६)

जैसे जैसे मनुष्य पाप करके सच सच कह देता है; वैसे वैसे वह केंचुलीसे सांप की तरह अधर्मसे पृथक् हो जाता है।

(४०)कृत्वा पापं हि संतप्य,तस्मात् पापात्प्रमुच्यते।
नैवं कुर्यात्पुनरिति, निवृत्या पूयतेतु सः ॥

(म० अ० ११० श्लो २३०)

पश्चात्ताप करके पापसे निवृत्त हो जाता है। "मैं फिर ऐसा नहीं करूं" इस प्रकार दृढ़ धारण करनी चाहिए।

अथ सप्तमः स्तवकः ।

(बीसवीं कला)

अवनतिके मूख्य चार कारण हैं।

(४१) अनभ्यासेन वेदानां, आचारस्य च वर्जनात् ।
आलस्यादन्नदोषाच्च, मृत्युर्विप्राज्जिघांसति ॥

(म० अ० ५ श्लो० ४)

वेदोंकी न पढ़ना, आचार पर ध्यान न रखना, आलस्य करना और भोजनमें अनियंम करना बुरा है।

(इक्कीसवीं कला)

सोनेसे पूर्व एकान्तमें बैठकर अपनाहित चिन्तन करो।

(४२) एकाकी चिन्तयेन्नित्यं,विविक्तेहितमात्मनः।
एकाकी चिन्तयानोहि, परं श्रेयोऽधिगच्छति ॥

(म० अ० ४ श्लो० २५८)

एकान्तमें चिन्तन करनेवाला कल्याणको प्राप्त करता है।

[बाइसवीं कला]

ब्राह्म मुहुर्त्तमें उठकर नित्य कर्म करो।

(४३) ब्राह्मे मुहूर्त्ते बुध्येत,धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत्।
कायक्लेशांश्च तन्मूलान्, वेदतत्वार्थ मेव च ॥

(म० अ० ४ श्लो० ९२)

ब्राह्म मुहूर्त्तमें उठकर धर्मार्थका चिन्तन करो।

[तेईसवीं कला]

अपनेसे बड़ोंको सदा नमस्ते करो।

[४४] अभिवादन शीलस्य, नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते, आयुर्विद्या यशो बलम् ॥

(म० अ० २ श्लो० १२१)

जो सदा अपनेसे बड़ों की सेवा करता है; और नमस्कार करता है उसकी आयु, विद्या, यश और बल चारों बढ़ जाते हैं।

[४५] अभिवादयेद्वृद्धांश्च, दद्याच्चैवासनंस्वकम्।
कृताञ्जलिरुपासीत, गच्छत पृष्ठतोऽन्वियात् ॥

(म० अ० ४ श्लो० १५४)

बड़ोंको नमस्कार करके, अपना आसन देवे, सामने हाथ जोड़कर रहे और चलते समय पीछे चले।

[चौबीसवीं कला]

गुरु की सेवा करके विद्या प्राप्त करो।

(४६) यथा खनन खनित्रेण, नरो वार्यधिगच्छति।
तथा गुरुगतां विद्यां, शुश्रूषुरधिगच्छति ॥

(म० अ० २ श्लो० २१८)

जिस प्रकार खोदनेसे पानी मिलता है; उसी प्रकार सेवासे विद्या प्राप्त होती है।

अथ अष्टम स्तवकः ।

(पच्चीसवीं कला)

अधिक भोजन कभी मत करो ।

(४७) अनारोग्यमनायुष्य,मस्वर्ग्यं चाति भोजनम् ।
अपुण्यं लोकविद्विष्टं, तस्मात्तत्परिवर्जयेत् ॥

(म० अ० २ श्लो० ५७)

अधिक भोजन करनेसे आरोग्यता नष्ट होती है । आयु घटती है । वास्तवमें अधिक भोजन करना पाप है ।

(४८) आर्द्रपादस्तु भुञ्जीत, नार्द्रपादस्तु संविशेत् ।
आर्द्र पादस्तु भुञ्जानो, दीर्घमायुरवाप्नुयात् ॥

(म० अ० ४ श्लो० ७६)

पाँव भिगोकर भोजन करो—ऐसा करनेसे दीर्घायु होती है । परन्तु सोते समय पांव धोकर अच्छी तरह पोंछलो ।

(४९)नोच्छिष्टंकस्यचिद्दद्यात्,नाद्याच्चैव,तथान्तरा
न चैवाध्यशनं कुर्यात्, न चोच्छिष्टःक्वचिद्व्रजेत्

(म० अ० २ श्लो० ५६)

जूठा भोजन किसीको मत दो । दो बार भोजन करो बीच-बीचमें बार बार मत खाओ कहा है:—"अग्नि होत्र समोविधिः।' अर्थात् जैसे अग्निहोत्रका समय है वैसा ही भोजनका समय है ।

(छब्बीसवीं कला)

मांस भक्षण महापाप है।

(५०) ना कृत्वाप्राणिनांहिंसा,मांसमुत्पद्यते क्वचित्।
न च प्राणिवधःस्वर्ग्य,स्तस्मान्मांसं विवर्जयेत्॥

(म० अ० ५ श्लो० ४८)

प्राणियों की हिंसाके बिना मांस नहीं प्राप्त होता है और प्राणियोंका बध पाप है। अतः मांस भक्षण छोड़ दो।

(५१) समुत्पत्तिं च मांसस्य,बध बन्धौ च देहिनाम्।
प्रसमोक्ष्य निवर्त्तेत, सव मांसस्य भक्षणात॥

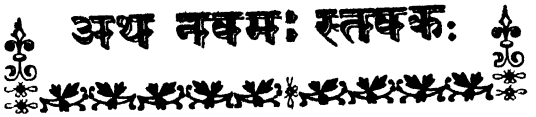
(म० अ० ५ श्लो० ४९)

मास की उत्पत्ति रजवीर्यसे जानकर घृणा पूर्वक मांसको छोड़ दो—प्राणियों की हिंसा तो महापप है ही।

(५२) स्वमांसं परमांसेन,यो वर्धयितुमिच्छति।
अनभ्यर्च्य पितॄन्देवां,स्ततोऽन्योनास्त्यपुण्यकृत॥

(म० अ० ५ श्लो० ५२)

दूसरोंके मांससे जो अपने मांसको बढ़ाने चाहता है उससे बढ़कर पापी कौन हो सकता है। इसलिये माँस भक्षणको महापाप जानकर छोड़ दो।



(सत्ताईसवीं कला)

आचार्यका लक्षण।

(५३) उपनीय गुरुःशिष्यं, वेदमध्यापये द्विजः।
सकल्पं सरहस्यं च, तमाचार्यं प्रचक्षते॥

(म० अ० २ श्लो० १४०)

उपनयन संस्कार करके जो यज्ञ क्रिया और उपनिषत् विद्या सहित वेदको पढ़ावे वह आचार्य होता है।

(अट्ठाईसवीं कला)

उपाध्यायका लक्षण।

(५४) एकदेशंतु वेदस्य, वेदाङ्गान्यपि वा पुनः।
योऽध्यापयति वृत्त्यर्थं, उपाध्याय स उच्यते॥

(म० अ० २ श्लो० १४१)

केवल वेतनके लिये वेदके एक अंग अथवा वेदांगों पढ़ानेवाला उपाध्याय होता है।

(उन्तीसवीं कला)

गुरुका लक्षण।

(५५) निषेकादीनि कर्माणि,यः करोति यथाविधि।
संभावयति चान्नेन, स विप्रो गुरु रुच्यते॥

(म० अ० २ श्लो० १४२)

जो उपनयन और विद्या दानके साथ साथ भोजन की भी चिन्ता करे वह गुरु कहलाता है।

(तीसवीं कला)

माता पिताका लक्षण !

(५६) यआवृणोत्यवितथं, ब्रह्मणाश्रवणावुभौ ।
स माता स पिताज्ञेय, स्तं न द्रुह्येत् कदाचन ॥

(म० अ० २ श्लो० १४४)

सच्चे माता पिता वे ही है जो निरन्तर वेद ज्ञानसे कानोंको भरें; अतः सच्चे मातापितासे कभी द्वेष न करो ।

(इकत्तीसवीं कला)

वेदानुकूल आचरण करनेवाला ही बड़ा है ।

(५७) न हायनैर्नपलितै, र्नवित्तेन नच बन्धुभिः ।
ऋषयश्चक्रिरेधर्मं, योऽनूचानःसनो महान् ॥

(म० अ० २ श्लो० १५४)

ऋषियोंने यह धर्म बनाया है कि जो वेद ज्ञानी है वही बड़ा है। आयु, धन आदिसे कोई बड़ा नहीं होता है ।

(बत्तीसवीं कला)

नवयुवक भी वृद्धोंकी तरह पूज्य हो सकते हैं ।

(५८) न तेन वृद्धोभवति, येनास्य पलितं शिरः ।
यो वै युवाप्य धीयान,स्तं देवाःस्थविरं विदुः ॥

(म० अ० २ श्लो० १५६)

बालोंके सफेद होनेसे कोई बूढ़ा नहीं हो जाता है; जो युवक भी वेद ज्ञानी है उसको भी विद्वान् लोग वृद्ध समझते हैं।



(तेतीसवीं कला)

षोडष संस्कार अनिवार्य हैं।

(५६) वैदिकैःकर्माभिः पुण्यै,र्निषेकादिर्द्विजन्मनाम्।
कार्यःशरीरसंस्कारः, पावनः प्रेत्य चेहच ॥

(म० अ० २ श्लो० २६)

शरीरके सोलह संस्कार वेद मंत्रों द्वारा अवश्य करने चाहिये,

[चौतीसवीं कला]

ब्रह्मचारी बनकर शूद्र भी विद्याका अधिकारी है।

(६०) यमेव तु शुचिं विद्या, न्नियत ब्रह्मचारिणम्।
तस्मै मां ब्रूहि विप्राय, निधिपाया प्रमादिने ॥

(म० अ० २ श्लो० ११५)

विद्या स्वयं कहती है कि जिस किसी को भी पवित्र और ब्रह्मचारी समझो उसके लिये मुझे दो।

(६१) आचार्य पुत्रःशुश्रूषु,ज्ञान दो धार्मिकःशुचिः।
आप्तः शक्तोऽर्थदःसाधुः, सोऽध्याप्यादश धर्मतः॥

(म० अ० २ श्लो० १०६)

सेवा करनेवाले, धार्मिक, पवित्र और समर्थको विद्या दान दीजिये।

[पैंतीसवीं कला]

गुरु भक्तिसे विद्या सफल होती है।

(६२) नोदाहरेदस्य नाम, परोक्षमपि केवलम्।
न चैवास्यानुकुर्वीत, गतिभाषित चेष्टितम्॥

(म० अ० २ श्लो० १९९)

गुरुके सामने तो गुरुका नाम लेना ही न चाहिये; पीछे भी सम्मान्य शब्दोंके साथ ही नाम बोलो। गुरु की नकल कभी मत करो।

[६३] गुरोर्यत्र परीवादो, निन्दावापि प्रवर्त्तते।
कर्णौ तत्र पिधातव्यौ, गन्तव्यं वाततोऽन्यतः॥

(म० अ० २ श्लो० २००)

गुरु की जहां निन्दा हो-वहांसे चले जाना चाहिये, यदि जाना कठिन हो तो कान बन्द करलो।

[छत्तीसवीं कला]

शूद्र कुलोत्पन्न विद्वान्से भी विद्या ग्रहण करो

[६४] श्रद्धधानः शुभां विद्या, माददीतावरादपि।
अन्त्यादपिपरं धर्मं, स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि॥

(म० अ० २ श्लो० २३८)

नीच कुलोत्पन्न भी यदि विद्वान् है तो उसको गुरु समझो और श्रद्धापूर्वक विद्या ग्रहण करो। विदुषी स्त्री भी गुण कर्मानुसार उच्चकुलको प्राप्त करती है

अथ एकादशः स्तवकः

[सैंतीसवीं कला]

क्षीन प्राणायाम प्रति दिन नियम पूर्वक किया करो।

(६५) दह्यन्ते ध्मायमानानां,धातूनां हियथामलाः
तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते, दोषाः प्राणस्य निग्रहात् ॥

(म० अ० ६ श्लोक० ७१)

जिस प्रकार धातुओंको तपानेसे सब मल जल जाते हैं, उसी प्रकार इन्द्रियोंके दोष प्राणायामसे दूर हो जाते हैं।

[अड़तीसवीं कला]

शुष्क विवाद और वैर किसीके साथ मत करो।

(६६) भद्रं भद्र मिति ब्रूयात्,भद्रमित्येव वावदेत्।
शुष्कवैरं विवादं च, न कुर्यात् केन चित्सह ॥

(म० अ० ४ श्लो० १३६)

सबके साथ सभ्यता पूर्वक बात करो। निष्प्रयोजन झगड़ा और वादविवाद किसीके साथ मत करो।

[उन्तालीसवीं कला]

संतोषी मनुष्य सब धनवानोंसे बड़ा है।

(६७) संतोषं परमास्थाय,सुखार्थी संयतो भवेत्।
संतोष मूलं हि सुखं, दुःख मूलं विपर्ययः ॥

(म० अ० ४ श्लो० १२)

सुखार्थीको संतोष करना चाहिए; सुखकी जड़ संतोष है।

[चालीसवीं कला]

रुपयेके लेन देनमें सदा ईमानदार बनो।

(६८) सर्वेषामेव शौचानां, मर्थशौचं परं स्मृतम्॥
योऽर्थे शुचिर्हि स शुचि, र्न मृद्वारि शुचिःशुचिः॥

(म० अ० ५ श्लो० १०६)

सबसे बड़ी सफाई हिसाब की है इसलिये कभी भी हिसाबमें बेईमानी मत करो।

[इकतालीसवीं कला]

हंसीमें भी जुआ मत खेलो।

(६९) द्यूत मेतत् पुराकल्पे, दृष्टं वैर कृतं महत्।
तस्मात् द्यूतं न सेवेत, हास्यार्थमपि बुद्धिमान्।

(म० अ० ९ श्लो० २२७)

जुआ खेलनेसे वैर पैदा होता है; अतः जुआ सर्वथा त्याज्य है।

[ब्यालीसवीं कला]

शराब पीना महा पाप है।

(६०) सुरा वै मल मन्नानां,पाप्मा च मल मुच्यते।
तस्मात् ब्राह्मणराजन्यौ,वैश्यश्च न सुरां पिबेत्॥

(म० अ० ११ श्लो० ९७)

शराब अन्नोंका मैल है, और मैल खाना पाप है। इसलिये शराब कभी नहीं पीनी चाहिये।

अथ द्वादशः स्तवकः ।

[तेतालीसवीं कला]

वर्ण व्यवस्था गुण कर्म स्वभावानुसार मानों ।

(७१) आचार्यस्त्वस्ययां जातिं विधिवद्वेदपारगः ।
उत्पादयति सावित्र्या, सा सत्या साऽजरामरा ॥

(म० अ० २ श्लो० १४८)

स्नातक बननेके बाद आचार्य जिस जातिको निश्चित कर देता है वही अजर और अमर है; जन्म की जाति नहीं ।

(७२) शुचिरुत्कृष्ट शुश्रूषु, मृदुवागनहं कृतः ।
ब्राह्मणाद्याश्रयो, नित्यमुत्कृष्टां जाति मश्नुते ॥

(म० अ० ९ श्लो० ३३५)

पवित्रता, सेवाभाव, मधुर वाणी निरभिमान आदि गुण धारण करनेसे नीच कुलोत्पन्न भी उच्च जातिको प्राप्त करता है ।

(७३) शूद्रो ब्राह्मणतामेति, ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्
क्षत्रियाजातमेवन्तु, विद्याद्वैश्यात्तथैव च ॥

(म० अ० १० श्लो० ६५)

शूद्र ब्राह्मण बन जाता है; ब्राह्मण शूद्र हो जाता है; इसी प्रकार क्षत्रिय और वैश्य भी ब्राह्मण बन सकते हैं । परन्तु ब्राह्मणके गुण कर्म धारण करनेपर ही उच्च वर्ण प्राप्त होता है; अन्यथा सब शूद्र हो जाते हैं । यही आर्यसमाजका वेद प्रतिपादित सिद्धान्त सर्वमान्य है । गीतामें भी कहा है:—"चातुर्वर्ण्यं मयासृष्टं गुण कर्म विभागशः" (आर्यकुमार—गीता श्लो० ६४)

(७४) यथा काष्ठमया हस्ती,यथा चर्म मयो मृगः ।
यश्च विप्रोऽनधीयान्, त्रयस्ते नाम बिभ्रति ॥

(म० अ० २ श्लो० १५७)

जिस प्रकार काठका हाथी और चमड़े का हिरन किसी काममें नहीं आते हैं केवल देखनेके लिये होते हैं उसी प्रकार मूर्ख ब्राह्मण भी नाम मात्रका ब्राह्मण है।

[चौवालीसवीं कला]

सह पाठियोंको जन्म की जातिसे बुरा मत कहो।

(७५)हीनाङ्गानतिरिक्ताङ्गान्विद्याहीनान्वयोऽधिका ।
रूप द्रव्य विहीनांश्च, जाति हीनांश्च नाक्षिपेत् ॥

(म० अ० ४ श्लो० १४१)

जन्मान्ध, कुरूप, विद्वान और नीच जातिमें उत्पन्न होने वालेको कभी मत चिढ़ाओ।

[पैंतालीसवीं कला]

माता पिताको नरकसे बचाना पुत्रका कर्तव्य है।

(७६) पुन्नाम्नोनरकाद्यस्मात्, त्रायते पितरंसुतः ।
तस्मात् पुत्र इति प्रोक्तः, स्वयमेव स्वयम्भुवा ॥

(म० अ० ९ श्लो० १३८)

"पुम्" नामके नरकसे माता पिता की रक्षाकरनेके कारण ही पुत्रका नाम पुत्र है।

अथ त्रयोदशः स्तवकः

[छियालीसवीं कला]

वर्ण केवल चार हैं।

(७७) ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्य,स्त्रयो वर्णाद्विजातयः।
चतुर्थ एक जातिस्तु, शूद्रो नास्ति तु पञ्चमः॥

(म० अ० १० श्लो० ४)

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र यही चार वर्ण हैं। पांचवा नहीं है।

[सैंतालीसवीं कला]

सच्चे ब्राह्मण का लक्षण।

(७८) धर्मेणाधिगता यैस्तु, वेदः सपरिबृंहणः।
ते शिष्टा ब्राह्मणा ज्ञेयाः, श्रुति प्रत्यक्ष हेतवः॥

(म० अ० १२ श्लो० १०६)

जिन्होंने धर्माचरण पूर्वक साङ्गोपाङ्ग वेद पढ़ा है वे ही सच्चे ब्राह्मण हैं।

[अड़तालीसवीं कला]

शूद्रका लक्षण।

(७९) वृषो हि भगवान् धर्म,स्तस्य यः कुरुते ह्यलम्
वृषलं तं विदुर्देवा, स्तस्माद्धर्मं न लोपयेत॥

(अ० अ० ८ श्लोक १६)

वृष शब्द धर्मके लिये प्रयुक्त होता है; और जो धर्मका पालन नहीं करता है उसीको विद्वान लोग शूद्र कहते हैं। जन्मसे शूद्र भी धर्म पालनसे उच्च जातिको प्राप्त करता है।

[उनचालीसवीं कला]

पूजनीयोंकी पूजा अवश्य करो।

(८०) वेदविद्या व्रतस्नातान्, श्रोत्रियान् गृहमेधिनः।
पूजयेद्धव्य कव्येन, विपरीतांश्च वर्जयेत् ॥

(म० अ० ४ श्लो० ३१)

वेदादि शास्त्रोंके ज्ञाता, व्रतधारी स्नातकों, वेद पाठियों और सद्गृहस्थियोंकी पूजा अन्नदानादिसे करो।

[पचासवीं कला]

निरक्षर ब्राह्मणोंको दान देना व्यर्थ है।

(८१) ब्राह्मण स्त्वन धीयान, स्तृणाग्निरिवशाम्यति।
तस्मै हव्यं न दातव्यं, न हि भस्मानि हूयते ॥

(म० अ० ३ श्लो० १६८)

अपठित ब्राह्मणको दान देना राखमें आहुति डालना है; जसे तिनकोंकी आग असमर्थ है, उसी प्रकार निरक्षर ब्राह्मणको भी जानो।

[इक्यावनवीं कला]

गुण हीन को कन्या देना पाप है।

(८२) काममा मरणात्तिष्ठेत्, गृहे कन्यर्त्तुमत्यपि।
न चैवैनां प्रयच्छेत्तु, गुण हीनाय कर्हिचित् ॥

(म० अ० ९ श्लो० ८९)

चाहे मृत्युपर्यन्त कन्या घरमें ही बैठी रहे परन्तु भूलकर भी गुण, कर्मसे हीनके लिये कन्या मत दो।

अथ चतुर्दशः स्तवकः

[बावनवीं कला]

स्त्रियोंका यथोचित सम्मान करो ।

(८३) यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते, सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥

(म० अ० ३ श्लो० ५६)

जिस देशमें स्त्रियोंका यथोचित आदर होता है वहां विद्वान् लोग प्रसन्न रहते हैं, अन्यथा सारे काम बिगड़ जाते हैं ।

[त्रेपनवीं कला]

स्त्रियोंके लिये पतिसे बड़ा देवता नहीं ।

(८४) विशीलः कामवृत्तोवा गुणैर्वा परिवर्जितः ।
उपचर्याः स्त्रिया साध्व्या, सततं देववत् पतिः ॥

(म० अ० ५ श्लो० १५४)

चाहे पति बुरे स्वभाव वाला और गुण रहित हो तो भी पतिव्रता स्त्रियां देवताकी तरह पतिकी सेवा करती हैं ।

(८५) नास्तिस्त्रीणांपृथग्यज्ञो,नव्रतंनाप्युपोषणम् ।
पतिं शुश्रूषते येन, तेन स्वर्गे महीयते ॥

(म० अ० ५ श्लो० १५५)

स्त्रियोंके लिये कोई अलग यज्ञानुष्ठान, व्रत, उपवास आवश्यक नहीं है । स्त्रियां तो पति सेवा से ही स्वर्गको प्राप्त करती हैं ।

[चौवनवीं कला]

सन्तानकी इच्छासे विधवा विवाह शास्त्रीय है।

(८६) यापत्यावा परित्यक्ता, विधवावा स्वयेच्छया।
उत्पादयेत् पुनर्भूत्वा, स पौनर्भव उच्यते।

(म० अ० ६ श्लो० १७५)

विधवा अपनी इच्छासे पौनर्भव पुत्रको उपन्न करती है।

नोटः—नियोगके अभावमें ही पुत्रन र्विवाह माना गया है।

[पछपनवीं कला]

अक्षय योनि विधवाका पुनः संस्कार मात्र होता है।

(८७) सा चेदक्षत योनिःस्यात्,गत प्रत्यागतापिवा।
पौनर्भवेन भर्त्रा सा, पुनः संस्कार महति॥

(म० अ० ६ श्लो० १७६)

यदि विधवा अक्षय योनि हो, चाहे पुनर्गमन भी हो चुका हो; तो भी उसके लिये पुनः संस्काकार अधिकार है।

[छप्पनवीं कला]

वर्णान्तर विधवासे वर्ण संकर नहीं होता है।

(८८) व्यभिचारेण वर्णोना, मवेद्या वेदनेन च।
स्व कर्मणां च त्यागेन, जायन्ते वर्ण संकराः॥

(म० अ० १० श्लो० २४)

व्यभिचार और अपने कर्मोंके परित्यागसे वर्णसंकर हो जाता है।

नोटः—अपने कर्त्तव्यका परित्याग कदापि न करो इसीसे वर्णसङ्कर होते हैं॥

अथ पञ्चदशः स्तवकः

[सत्तावनवीं कला]

अपना बलिदान करनेसे स्वाराज्य प्राप्त होता है।

(८९) सर्वभूतेषु चात्मानं, सर्वभूतानि चात्मनि ।
समं पश्यन्नात्मयाजी, स्वाराज्यमधिगच्छति ॥

(म० अ० १२ श्लो० ९१)

सर्व प्राणियोंको अपनी तरह समझनेवाले तथा अपने सर्वस्व की आहूति देनेवाले ही स्वराज्य प्राप्त करते हैं।

[अट्ठावनवीं कला]

परतन्त्रतासे बढ़कर कोई दुःख नहीं है।

(९०) सर्वं परवशं दुःख, सर्वमात्मवशं सुखम् ।
एत द्विद्यात समासेन, लक्षणं सुखदुःखयो ॥

(म० अ० ४ श्लो० १६०)

दूसरेके वशीभूत होना ही दुःख है, और स्वाधीन रहना ही सुख है। अतः स्वाधीनताके लिये पूर्ण प्रयत्न करो।

[उनसठवीं कला]

अनार्योंके तो पड़ोसमें भी न रहो।

(९१) बालघ्नांश्च कृतघ्नांश्च, विशुद्धानपि धर्मतः।
शरणागत हतृंश्च, स्त्री हतृंश्च न संवसेत् ॥

(म० अ० ११ श्लो० १९०)

बच्चोंको मारने वाले, कृतघ्नी, शरणागतोंको मारनेवाले एवं स्त्रियोंकोसतानेवालों के पास कदापि निवास मत करो।

[साठवीं कला]

पाखण्डी और धूर्त्तों का तो वाणीसे भी सम्मान मत करो।

(६२) पाषण्डिनो विकर्मस्था,न्वैडालव्रतिकाञ्छठान्।
हैतुकान् वकवृत्तींश्च,वाङ्मात्रेणापि नार्चयेत् ॥

(म० अ० ४ श्लो० ३०)

पाखण्डियों, नास्तिकों और कुतर्कियोंका वाणीसे भी आदर मत करो।

[इकसठवीं कला]

जो प्राण लेने आता हो चाहे पूज्य भी हो उसको मारडालो।

(६३) गुरुं वा बालवृद्धौ,वा ब्राह्मणं वा बहुश्रुतम्।
आततायिन मायान्तं, हन्यादेवाविचारयन्।

(म० अ० ८ श्लो० ३५०)

चाहे गुरु हो, बालक हो, बूढ़ा हो, ब्राह्मण हो, कोई भी हो यदि वह प्राण लेना चाहता हो तो बिना विचारे मारडालो।

[बासठवीं कला]

दण्डके बिना पापसे छुटकारा नहीं होता है।

(६४) नहि दण्डादृते,शक्यः कर्त्तुं पाप विनिग्रहः।
स्तेनानां पाप बुद्धि बुद्धीनां निभृतं चरतां क्षितौ॥

[म० अ० ९ श्लो० २६३]

दण्डके बिना पाप नहीं रुकता है। इसलिये दण्ड मिलनेपर बुरा मत मानो; अपितु पापोंको छोड़दो।

अथ षोडशः स्तवकः

[सोलहवीं कला]

शुद्धिका कार्य अत्यन्त आवश्यक है।

(९५) शनकैस्तु क्रिया लोपा,दिमाःक्षत्रिय जातयः।
वृषलत्वं गता लोके, ब्राह्मणादर्शनेन च ॥

(म० अ० १० श्लो० ४३)

प्रायः क्षत्रिय जातियां ब्राह्मणोंके प्रमादके कारण शूद्र एवं अनाय बनगई हैं। इनकी शुद्धि करनी चाहिये।

(९६) अनुक्त निष्कृतीनांतु, पापनामपनुत्तये।
शक्तिं चावेक्ष्य पापं च, प्रायश्चित्तं प्रकल्प्यते ॥

(म० अ० ११ श्लो० २०९)

जिन पापोके लिये शास्त्रोंमें प्रायश्चित्त नहीं बताये है; उन पापों की मात्रा देखकर शुद्धि संस्कार कर लेना चाहिये।

(९७) एनस्विभिरनिर्णिक्तै,नार्थं किञ्चित्सहाचरेत्।
कृत निर्णेजनांश्चैव. न जुगुप्सेत कर्हिचित् ॥

(म० अ० ११ श्लो० १८९)

जिन्होंने शुद्धि करालो है। उनको फिर कभी भी निन्दित नहीं समझना चाहिये; अपितु उनके साथ प्रेम और सहानुभूतिका व्यवहार करके सदाके लिये साथ मिला लेना चाहिये।

[चौंसठवीं कला]

गोरक्षासे बढ़कर अन्य पुण्य नहीं है।
(भारतवर्षको स्वराज्य गोरक्षासे ही मिल सकता है)

(९८) आतुरामभिशस्तां वा,चौरव्याघ्रादिभिर्भयैः।
पतितां पङ्कलग्नां वा, सर्वोपायैर्विमोचयेत् ॥

(म० अ० ११ श्लो० ११२)

कसाई, चोर और व्याघ्रादिके पंजेसे गायको सर्व प्रयत्नसे छुड़ा डालो।

(९९) आत्मनो यदि वान्येषां,गृहे क्षेत्रेऽथवाखले।
भक्षयन्तीं न कथयेत्, पिबन्ते चैव वत्सकम् ॥

(म० अ० ११ श्लो० ११४)

गाय यदि खेत खारही हो, अथवा बछड़ेको दूध पीला रही हो तो भी कुछ न कहो। यहां भी गौके प्रति पूजाका भाव दिखाया है।

(१००) उष्णोवर्षति शीतेवा,मारुतेवाति वाभृशम्।
न कुर्वीतात्मनस्त्राणं, गोरक्त्वा तु शक्तितः ॥

(म० अ० ११ श्लो० ११३)

गरमी हो, सरदी हो, वर्षा हो, आंधी हो, अथवा कोई अन्य आपत्ति गायपर आती हो तो अपने प्राणोंका तनिक भी ध्यान मत कर गाय की रक्षा करलो। जिस दिन भारतके बच्चे २ में गौके प्रति इतना पूजा भाव उत्पन्न हो जायगा—उस दिन भारत स्वतन्त्र होगा। याद रखो गो (पृथिवी वाणी, गौ) रक्षा करने वाला देश कभी परतन्त्र नहीं रह सकता है।

* समाप्त मिदं मनुस्मृति शतकम् *

आर्यकुमार-जयघोष

रचयिता—स्वर्गीय श्री पं० देवदत्तजी सिद्धान्तालंकार

आदर्श-आर्यकुमार

(संस्थापक—:गुरुकुल रामताल—देहली)

नोट—: प्रत्येक आर्यकुमारके जीवनसे सच्ची जय होगी।

—*—

जय बोलो, जय बोलो, महाराज,

स्वामी दयानन्द को ॥ ध्रुव ॥

(१)

जिसने सत्यमार्ग दिखलाया, वेदोंको फिरसे अपनाया।

सबका किया सुधार—मिलकर, जय बोलो०

(२)

जात पांतका भेद मिटाया, गुण कर्मोंसे वर्ण चलाया।

खोला वैदिक द्वार—मिल कर, जय बोलो०

(३)

वेद ज्ञानसे गगन गुञ्जाया, "ओ३म्" नामका झण्डा लगाया।

कीन्हा पर उपकार—मिलकर, जय बोलो०

आर्य कुमारोंका सबसे प्यारा मित्र कौन?

सचित्र मासिक पत्र

आर्य-कुमार

लोग आर्यकुमारको क्यों पसंद करते हैं? केवल इस लिए कि भारतवर्ष भरमें युवकोंका सबसे सुन्दर और उपयोगी पत्र यही है।

आर्य-कुमार की विशेषताएं

(१) प्रत्येक महीनेमें बढ़िया और सुन्दर एवं भाव पूर्ण चित्र निकलते हैं।

(२) आर्य-कुमारमें हिन्दी साहित्यके विद्वानोंके लेख कविताएँ और गल्पें रहती है।

(३) हंसी मजाकके लिये विनोद वर्षा चुटकले रहते हैं।

(४) संगीतसुधा वेदामृत-कविताकलाप-बालमनोरञ्जन और महिला मनोरञ्जनसे परिपूर्ण रहता है।

(५) इसपर भी मूल्य केवल ३ रुपया वार्षिक।

(६) वर्षमें ३ विशेषांक निकलते है।

(७) आर्य कुमार, बालक, युवा, वृद्ध, सबके लिये उपयोगी है। क्या ऐसे उपयोगी पत्रके भी आप ग्राहक न बनेंगे? तब फिर आज ही ३) का मनीआर्डर भेजकर ग्राहक बनजाइये।

मैनेजर आर्यकुमार-- कलकता।

गीताका निचोड़

आर्यकुमार-गीता

कलियुगमें सबसे बड़ा धमशास्त्र "गीता" को माना गया है। वर्त्तमान हिन्दू जनताके उद्धारमागका जितना खुलासा गीतामें किया गया है; उतना किसी पुस्तकमें नहीं है। वेदोंका तो नाम भी कलियुगमें साधारण लोग नहीं जानते—फिर उनकी गम्भीरता पर विचार करना तो असम्भवसा हो होरहा है। अस्तुः—एक मात्र अवशिष्ट गीताका भी जितना पठन पाठन होता है वह सन्तोष प्रद नहीं है। कारण—जनता की ज्ञान न्यूनता, प्रमाद और समयाभाव है। इन सब अवस्थाओं पर पूर्ण विचार करके गीताके अत्यन्त आवश्यक सौ श्लोकोंका संग्रह कर दिया है; जिन्हें प्रत्येक हिन्दू विशेषतः प्रत्येक आर्यकुमार प्रतिदिन सुगमतया पढ़ सकता है। सारांशमेंः—**उपनिषदोंका निचोड़ गीता है, और गीताका निचोड़ 'आर्यकुमार गीता' है।**

प्रत्येक हिन्दू और विशेषतः आर्यकुमारको एक प्रति अविलम्ब मंगा लेनी चाहिये। पुस्तक 'लेखक" के पास चार आनेके टिकट भेज देनेसे घर बैठे मिल सकती है। आर्यकुमारोंका केवल तीन आनेके टिकटमें भेज दी जाती है। आर्यकुमारोंको "आर्यकुमार-गीता" अवश्य पढ़ी चाहिये।

आर्यकुमारोंके लिये अन्य पुस्तकें



आर्यसमाजका परिचय

आर्यसंसारके प्रसिद्ध विद्वान शान्त स्वामी अनुभवानन्दजी महाराज द्वारा लिखित यह पुस्तक आर्यसाहित्यमें एक नई चीज़ है। आर्यसमाज क्या है इस विषयपर स्वामीजीकी लेखनीने कमाल करदिया है। मूल्य केवल –)। प्रति (डाक खर्च अलग)

आर्यकुमार-संकीर्त्तन

एक ही पुस्तकमें स्वस्तिवाचन, शान्ति प्रकरण, ईश्वरप्रार्थना, अर्थसहित संध्या, अग्नि होत्र और तीसके लगभग उत्तम भजनोंका संग्रह है। मूल्य –)।

इसका तृतीय संस्करण बड़ा सुन्दर निकला है।

पुस्तक मिलनेका पता –

आर्यकुमार कार्यालय

कलकत्ता।

॥ ओ३म ॥

गुरुकुलका जातीय गीत



रचयिता—आर्यकवि श्रीयुत पं० बंशीधरजी विद्यालंकार
आचार्य गुरुकुल सूपा गुजरात

[१]

"श्रद्धानन्द गुरू" के सच्चे, बनकर हम शिष्य दिखायेंगे।
जगमें वेदोंका सन्देशा, निज लोहूसे लिखजावेंगे॥

[२]

"दयानन्द" के सैनिक होंगे गुरुकुलके स्नातक हम बनकर।
आशाएं आर्यसमाजों की, पूरी सारी कर जायेंगे॥

[३]

चाहे हो कहीं करें कुछ भी, सच्चाई कभी न छोड़ेंगे।
दलितों असहाय अनाथोंको, हम अपने गले लगायेंगे॥

[४]

तलवार तमंचोंके आगे, हम खोलेंगे अपनी छाती।
पर अपनी टेक न छोड़ेंगे, निर्भय बनना सिखलायेंगे॥

[५]

ध्वजा ओ३म की फहरायेंगी, मस्जिद गिर्जा अरु मन्दिर पर।
सारे भूमण्डलको फिरसे, हम सच्चा आर्य बनायेंगे॥

[६]

"दयानन्द" के पुण्य यज्ञमें, दीक्षा दी है "सन्यासा" ने।
उसमें हम अपने जीवनकी आहुतियाँ देते जायेंगे॥

[७]

ऋषियोंकी जननी भारतको, फिरसे स्वाधीन करायेंगे।
"गुरुकुल" के गौरव तब ही हम, "विद्यालंकार" कहलायेंगे॥



हर्ष समाचार

श्रद्धानन्द पुस्तकमाला

आर्यकुमारोंको एवं अन्य नवयुवकोंको यह सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि भारतवर्षीय आर्य-कुमार परिषद्के प्रकाशन विभागने अपने पूज्य नेता स्व० स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज की पुण्यस्मृतिमें "श्रद्धानन्द पुस्तकमाला" प्रकाशित करनेका शुभ संकल्प किया है। इस मालाका "आर्यकुमार स्मृति" प्रथम पुष्प है। शीघ्र ही निम्नलिखित पुस्तकें भी प्रकाशित होने वाला है।

प्रत्येक आर्य-कुमार सभाको हमारी यह पुस्तकें मंगाकर प्रत्येक आर्यकुमार तक इन्हें पहुंचाना चाहिये। इस मालामें बड़े बड़े विद्वानोंकी उपयोगी रचनाएं प्रकाशित करनेका विचार है। आवश्यकता केवल सहयोगकी है।

प्रकाशित होने वाली पुस्तकें

१—शहीद श्रद्धानन्द (जीवन चरित्र) मूल्य =)
२—शुद्धि अछूतोद्धार नाटक ,, =)
३—A Clue to the understanding of Aryasamaj ,, I \=

एक साथ १०० पुस्तकें मंगानेसे २५ रु० सैकड़ा कमीशन दिया जाता है।

मिलनेका पता

भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद्

प्रकाशन विभाग

आर्य-कुमार कार्यालय- कलकत्ता।